प्रदर्शनियों की आज कल धाम धूम लगी हुई है। इस विराट स्वरूप के चित्र पर भी अच्छा समझाया जा सकता है। सभी शुद्र तीक हैं इस समय। फिर शुद्रों के बाद आवेंगे ब्राहम्ण। ब्राहम्ण बने बिना देवता बन नही सकते हैं। ब्रह्मा द्वारा ब्राहमण चाहिये। तुम बच्चों को सहज समझ में आता है। मनुष्यों की बुधी में बैठता नह नही है। कलियुग के बाद जरूर नई दुनियाँ चाहिये। तुम बच्चों की बुधी में सारी बात है। ब्राहम्ण सो देवता। 84 जन्म भी तुम इसी में दिखाते हो। बाकी तो अनेक मनुष्य और अनेक उनके प्रश्न होंगे। क्योंकि अनेक मत वाले है। उनको फिर एक श्रीमत पर लाने में मेहनत लगती है। ड्रामा की ढाल पर भी रहना होता है। जो पास्ट हुआ सो फिर उसका चिन्तन नही चले। यह प्वाइन्टस समझानी थी अच्छा आगे चल कर फिर समझावेंगे। वार्ता पूरी हुई तो स्टाप कर देना चाहिये। प्वाइन्टस का ही चिन्तन नहा चलता रहना चाहिये। पुरूषार्थ करते कराते रहते है। ड्रामा पर खड़े रहना है। भक्ति आ गयी तो बहुत दर-बदर होते हैं। यज्ञ तप दान पुण्य। हर एक जन्म में गुरू करना होता है। फिर इस समय गुरू एक ही मिलता है। सर्व की गति सदगति करने वाला है एक। गुरू किया ही जाता है गति सदगति के लिये। तो तुम्हारा अब बेड़ा पार हो गया है। वहाँ तो भिन्न-2 प्रकार के साधु सन्त होते हैं तो उनके पास जाते है। तुम बच्चों को भी जाने की दरकार नही है। तुमको तो एक से ही गुण सीखना है। तुम सिर्फ जाते हो तो देख-रेख करने तुमको तो निश्चय रहता है। वो नही समझते हैकि कल्प पहले भी हमने यही गुरू किया था। तुम निश्चय करते हो सदगति दाता गुरू एक ही है। जो बाप तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न बना देते है। यह तो तुम बच्चों को मालूम है कि सर्वगुण सम्पन्न एक से ही बनना है। कल्प पहले भी बने थे। तुम सभी ही सर्वगुण सम्पन्न।.... बन रहे हो। सबका पुरूषार्थ अच्छी रीती चलता है। प्रदर्शनी में बहुत नही समझाया जा जाता है है। जब ऐसे समझाने में बैठते है तो ~~एक दो भी सम जाता है। सभी बैठे भी समझेंगे तो~~ टाइम ही चला जावे। कायदा है कि एक एक को अलग समझाना। ग्रुप में भिन्न-2 विचार होते है। अकेले को तो अच्छी रीती पकड़ लेते हो। जैसे कि गुरू में एक-2 को समझाया जाता था। तो भी मोम बदनाम होता था कि आँखो में आँखें लड़ाते है। एक दो के सामने बैठते है। हम आत्मायें तो भाई-2 ठहरे ना। बाप कहते है मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे और तुम सतोप्रधान नई दुनिया के मालिक बन जावेंगे। जब विनाश सामने आवेगा तब फिर समझेंगे कि कुछ है। बहुत खुशी को भी पावेंगे। सच यह तो भगवान राजयोग सिखा रहे है। बच्चे जानते है सृष्टी बदलने वाली है। उपद्रव दिन प्रति दिन बहुत होते रहते है। पैसों के लिये पिकेटिंग घेराव हड़ताल क्या-2 करते रहते है। विघ्नो का कोई पारावार नही है। फिर बाद में निर्विघ्न दुनियाँ बन जावेगी। बापके स्थापन किये हुये राज्य में कोई विघ्न पड़ नही सकता है। विघ्न पड़ते ही है रावण के पुराने राज्य में। बच्चे भी समझ गये है रावण ही बड़ा दुश्मन है। मनुष्य रावण जलाते है परन्तु समझते नही कि वो हमारा दुश्मन है। दुश्मन समझ कर भी जलाया नही जाता। धमके से जैसे कि खेल करते है। बच्चे समझ गये है कि हमारा पुराने ते पुराना दुश्मन यही है जिससे कि हम हारते है। अब जीत पहन रहे है श्रीमत से। बच्चों को समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। कोई अच्छा समझते है बाकी कुछ कच्चा काम करती है। नया धर्म कोई स्थापन नही होता। जो धर्म प्राय: लोप हो गया है वो ही फिर से स्थापन करते है। तुम जानते हो यह आर्य समाजी आद फिर से अपने मठ पंथ स्थापन कर रहे है। उनको ड्रामा का पता नही है। तुम बच्चों को तो सारी दुनियाँ की आद मध्य अन्त की नालेज है। कोई एक भी मनुष्य नही जिसकी बुधी में यह ज्ञान हो। तुमको साफ साफ बुधी में है। तुम्हारे में भी थोड़े-2 है जिनकी बुधी में अच्छी-2 प्वाइन्टस है। प्वाइन्टस तो बहुत-2 है। सात रोज का कोर्स जब तक नही आवे तब तक बुधी में कुछ बैठ नही सकता। कायदेमुजीब पढ़ाते है राजयोग तो मेहनत करनी जरूर आनी पड़े। फिर भी कहा जाता है जो भी हम एक्ट करते है ड्रामा प्लान अनुसार। प्वाइन्टस का कोई चिन्तन नही चले। समझाना तो छोटे बड़े को है। अच्छा गुड नाईट